



मेरी प्रेयसी और मैं: दो बदन एक जान-2

“मेरी प्रेमिका और मेरे बीच सब कुछ हुआ, उसकी शादी से एक दिन पहले वो मुझसे मिली. उसने कहा कि आज हम कुछ नहीं करेंगे. लेकिन वास्तव में क्या हुआ उस दिन ? ...”

Story By: (neelesh1)

Posted: Monday, December 31st, 2018

Categories: [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [मेरी प्रेयसी और मैं: दो बदन एक जान-2](#)

मेरी प्रेयसी और मैं: दो बदन एक जान-2

कहानी का पिछला भाग : मेरी प्रेयसी और मैं: दो बदन एक जान-1

“अच्छा ... तो अब आपके ईमान मुझे ठीक नहीं लग रहे ! मेरी साड़ी आपने उतार ही दी है और मेरी चूत को भी ना के बराबर के कपड़ों का ही सहारा है. और आपका लन्ड लगातार मेरी चूत के दरवाजों को तलाशता हुआ ही लग रहा है.”

“लेकिन आज न तो आपका लन्ड कामयाब हो पायेगा ... न ही मेरी चूत उसे अपने भीतर समाने देगी ! देख लेना ... आप चाहे मुझे कितना ही जला लें ! मेरी वासना की आग को आप कितना भी भड़का दो पर आज न चुदूँगी मैं आपसे ! देख लेना !” मीता ने अपनी बड़ी बड़ी कजरारी आँखें मटकाते हुए मुझे चैलेंज किया.

“ठीक है ... तो फिर बचो मेरे हमलों से ! और सुन लो तुम भी कि मैं भी सिर्फ ऊपर से ही सब करूँगा. मेरा लन्ड तुम्हारी चूत में मैं तो अपनी तरफ से ना घुसा रहा आज !”

“चलो फिर तय रहा यह हमारे बीच !” !

“बाकी हम सारा प्यार का का खेल खेलेंगे ही, बस चुदने का फैसला लन्ड और चूत ही करें आज तो !”

“ठीक है मेरे राजा !” मेरे लन्ड को अपने हाथ में लेकर मुठियाते हुए मीता बोली.

और उसकी इस हरकत ने मेरी उत्तेजना को सातवें आसमान पर पहुँचा दिया और मेरे होंठों से भी सिसकारी फूट पड़ी. फिर अब भला मैं कहाँ पीछे रहने वाला था, इसस्स ... आआह

...’ सिसकारी भरते हुए मैंने भी मीता की नाभि में उंगली से चुदाई शुरू कर दी और दूसरी उंगली से चूत को अंदर बाहर करते हुए दोतरफा बाहरी चुदाई शुरू कर दी.

मेरे इस अंदाज ने मीता के छक्के छुड़ा दिए, उसकी चूत से मादक रसधार बह निकली और मीता के होंठ गोल होकर सिटी में तब्दील हो गए और उनसे लगातार मादक आआह और सिसकारियां खारिज होने लगी- उफ्फ ... आआआह ... इस्ससीई ... आआह ... आआह मार ही डालोगे क्या आज ? मुझसे बर्दाश्त नहीं हो रहा मेरे राजा ! यह कहकर मीता अपनी चूत पेंटी के ऊपर से ही मेरे लन्ड से रगड़ने लगी और सिसियते हुये मेरे कंधों पर उत्तेजना में अपने होंठों को भी गड़ा दिया.

तभी मेरी एक उंगली ने आवारगी करते हुए मीता के उरोजों के सहलाते हुए नीचे का सफर तय करते हुए नाभि की गहराई और मादकता को सहलाते हुए ढलान की तरफ फिसल चला और धीरे से मीता की मादक और रसभरी चूत के छल्लों में मेरी एक उंगली जा घुसी थी और यौवनरस से सराबोर उस गहरे आनन्दवन में मदनमणि की तलाश में उसने मीता की यौवन उत्तेजना को गगन तक पहुंच दिया.

“आआह ... इस्ससीई ... उफ्फ ... आआह !” लम्बी आह मीता के मुख से इसलिए फूटी थी कि उरोजों को चूमने के दौरान ही मेरा लन्ड मीता की पेंटी के ऊपर से ही चूत के भीतर तक छल्लो में जाकर फंस गया था. मीता आनन्द से सिसकारी भर उठी.

लन्ड पर मैंने अपना कोई दबाव नहीं बनाया लेकिन दोनों उभारों को मैं पूरी ताकत से दबा कर चूस रहा था और गोल गहरी नाभि में उंगली चोद रहा था. इधर मेरा लन्ड मीता की चूत के छल्लों में फंसकर और कठोर हो गया था और बस पेंटी फाड़कर अंदर समा जाने को आतुर हो रहा था.

मीता से न रहा गया और वह लन्ड अंदर लेने के लिए कूल्हे ऊपर हिलाने लगी.

मैं हड़बड़ाया- मीता, लन्ड भीतर घुस जाएगा. क्या कर रही हो ?

“उफफ ... बस अब चोद भी दो ... मुझसे बर्दाश्त नहीं हो रहा !”

“नहीं मीता ... तुम कह रही थी कि ...”

“कहना कुछ नहीं ... बस अब डाल दो !”

और यह कहकर मीता ने जोर से अपने कूल्हे उछाले.

और यह क्या ... लन्ड मीता की पेंटी को किनारे से चीरता हुआ चूत के छल्ले में जा फंसा.

“हम्म ... आआह ... !” एक मदभरी आनन्द भरी आह मीता के होंठों से निकली और तभी मैंने अपने कूल्हों को हरकत दी और मेरा लन्ड थोड़ा सा बाहर आ गया और चूत उसे अपने अंदर लेने की अभिलाषा लेने की आशा में फड़फड़ाती रह गयी.

मीता ने रोष भरी नजरों से मुझे देखा और बिस्तर से उठ कर बैठ गयी.

उफफ ... क्या सौंदर्य की स्वामिनी लग रही थी मीता !

पूर्णतः नग्न ... सिर्फ पेंटी में अपना जोबन सँभाले मीता की मदभरी काया किसी भी मुर्दे में जान फूंकने की महारत रखती दिख रही थी.

पतली कमनीय कटावदार कमर और उस पर कोहेनूर हीरे सी जड़ी गोल गहरी नाभि और ऊपर रसभरे दो यौवनकलश जिनके रस को मैं जितना पीता था, उतनी ही प्यास बढ़ती थी.

मुझसे वो गुस्से में बोली- क्यों नहीं चोद रहे मुझे आप अब ? प्लीज चोद डालिये मुझे ...

रगड़ कर रख दीजिए मेरी चूत को ! और मैं भी आज आपके इस लन्ड महाराज को खा जाऊंगी देखिएगा.

यह कहकर मीता ने मेरे लन्ड को अपने हाथों में थमा और अपने होंठों से सुनहरे सुपारे को चूम लिया.

“उफफ आआह !” मेरी सिसकारी निकल पड़ी.

मैंने भी मीता के कूल्हों को अपने हाथों में थामा और गहरी गोल नाभिकूप पर अपने जलते

होंठ रख दिये.

“उफफ ... इस्ससीई ... आआह !” मीता अंगड़ाई लेकर मादक सिसकारी भर उठी. उसके अंगड़ाई लेने से उसके चिकने पेट और खमदार पतली कमर की मादकता और बढ़ गयी और उसके पेट के पोर पोर पर मैंने अपने चुम्बनों की छाप अर्पित कर दी. और चुम्बन लेते हुए ही मैंने मीता की पेंटी के इलास्टिक में उंगलियां फंसाई और उसे नीचे सरकाता चला गया.

और अब जन्नत के दरवाजा मेरे होंठों के, मेरी आँखों सामने था.

रसभरी मीता की चूत से मदनरस बहकर जांघों की गीला कर रहा था.

मैंने बिना देर किए अपनी मीता के चूत के उठाव पर अपने होंठों को चिपका दिया.

“उफफ ... आआआ ... आआह इस्ससीई !” मीता वासना से अवश होकर सिसकारी भरने लगी.

और फिर उस जन्नत के दरवाजे पर मैंने अपनी हाज़िरी देकर चूत के भीतर अपनी जुबान घुसा दी और मदनमणि की तलाश में जीभ को अंदर तक घुसा दिया. मीता अपनी कमर को लयबद्ध अंदाज़ में उछालने लगी. जैसे ही उसकी पतली खमदार कमर ऊपर को उठती, मेरी जुबान भीतर तक चली जाती और नीचे कमर आने पर जुबान मदनमणि को सहलाने लगती.

मीता ज्यादा देर तक इस आनन्द को बर्दाश्त न कर पाती. जैसे ही मुझे लगा कि वो झड़ने की कगार पर है, मैंने अपनी जीभ बाहर निकाल ली और अपनी चड्डी उतार कर मीता के मदभरे बदन पर छा गया और अपना लन्ड मीता की चूत की दरार पर फिट कर दिया.

मीता यह देखकर कुहुक उठी. उसकी उत्तेजना सातवे आसमान पर थी. मेरा लन्ड मीता की चूत के दरवाजे को सिर्फ स्पर्श कर रहा था कि मीता ने अपने होंठों को दबाकर जोर से अपने कूल्हे उछाले और इसी के साथ लन्ड फिर से जाकर चूत की छल्लों की बाहरी दीवार पर

फिट हो गया

“अर्र मीता ... यह क्या कर रही हो ? लन्ड अंदर घुस जाएगा ... मत करो !”

“तुम शांत रहो बस !” गुस्से में मीता ने कहा और फिर से एक बार जोर से अपने कूल्हे उछाले.

“और ये क्या ... इस बार तो सीधा लन्ड चूत को चीरता हुआ सीधे अंदर जा घुसा और बच्चेदानी से जा टकराया.

“हम्मम ... मम्म ... हाय... आआ आआह !”

एक लम्बी मदभरी मादक सीत्कार हम दोनों को होंठों से निकली, लन्ड मेरी मीता की चूत की जड़ तक ठोक चुका था और फिर तो मेरा काम भी चालू हो गया. मैंने अपना लन्ड थोड़ा सा बाहर खींचा और फिर पूरी ताकत से मेरी मीता की चूत में घुसा दिया.

“आआआह ... इस्स .. सीई ... इसीई ... उफ्फ ... ओहहो मेरे राजा चोदो मुझे ... आआह बस ऐसे ही ... आआआह और जोर से ... आआआ आह !”

और फिर तो इस मदभरे खेल में धक्कमपेल शुरू हो गया, दो नग्न शरीरों का यह खेल खूब लम्बा चला मेरे लन्ड और मीता की चूत में जंग बहुत देर जारी रही. मीता की चूत भी मैदान छोड़ने को तैयार नहीं थी और हमारे लन्ड महाराज भी सटासट अपना पिस्टन अंदर बाहर किये जा रहे थे.

“उफ्फ ... आआआह !”

यह आनन्द भरा खेल बस अब अपने अंतिम दौर में ही था. मीता की आहों कराहों से पूरा कमरा गर्म हो गया था, पूरे बिस्तर पर चादर पर सलवटें पड़ गयी थी.

और तभी

“आआ आह ... हम्म मम्म ...” एक लंबी मदभरी हुंकार के साथ मीता झड़ने लगी और उसकी कमर कमान की तरह तन गयी उसने मुझे अपनी बांहों में कस लिया और मेरे लन्ड

को अपनी योनि में जोर से कस लिया और तभी एक जोर के धक्के के साथ मैं भी स्वलित होने लगा और मीता की चूत मेरे वीर्य से भरने लगी.

लगातार 20 झटकों के साथ अपना सारा वीर्य मैंने अपनी मीता की चूत में उड़ेल दिया, समर्पित कर दिया. फिर एक बार मेरे आखिरी झटके के साथ ही हम दोनों के मुख से एक साथ मादक सीत्कार फूट पड़ी.

हम दोनों फिर से एक दूसरे को हराकर जीत भी गए थे.

हमारी आँखें आपस में मिली और मैंने उस प्यार की देवी के माथे को चूमा और अपने सीने से चिपका लिया.

मेरा लन्ड अभी भी मीता की चूत के भीतर ही था. मेरा लन्ड से मीता की चूत में भरा प्रेमरस बहता हुआ चादर पर फैल गया था.

हम दोनों एक दूसरे को बांहों में थामे हुए अपनी काबू से बाहर हुई सांसों को काबू में करते हुए एक दूजे में यों ही समाये रहे ... न ही मेरा लन्ड बाहर निकालने को मन हो रहा था न ही मीता उसे बाहर निकालने देना चाहती थी. हम दोनों के चर्मोत्कर्ष को प्राप्त कर लेने के बाद भी हम उस आलिंगन के पलों से बाहर नहीं आना चाहते थे.

और ऐसा ही था हमारा प्यार करने का अंदाज़ कि हम दोनों का एक दूसरे से कभी जी ही नहीं भरता था. सामान्यतया मर्द ज्यादातर झड़ने के बाद मुख फेरकर सोना ही पसंद करते हैं जबकि औरतें इन पलों को स्वलन के बाद भी जीना चाहती हैं. लेकिन मैं मर्दों में अपवाद था, मैं भी उसके बाद के पलों में भी वही स्वर्गिक आनन्द में जी लेता था. लेकिन यह आकर्षण सिर्फ मीता के साथ गुजारे पलों में ही था, उसके अलावा मेरे सम्बन्ध जहां भी बने, वहां पर मैं एक सामान्य मर्द ही होता था.

हमारी सांसें स्थिर हो चली थी ... प्यार के गुजरे मादक और अविस्मरणीय पलों की महक

और उन पलों को कहीं अंदर ही रेकार्ड कर लेने की कोशिश करते हुए हम दोनों की एक दूसरे के शरीर को पुनः अहसासों से भरता हुआ महसूस करने लगे. मेरा लन्ड शनैः शनैः कठोर होने लगा था और एक अजीब सा आनन्द हम दोनों की नसों में सनसनाता हुआ सा गुजरने लगा था. मीता के होंठ स्वयमेव सिसकारियां निकलने लगे, मेरी जिह्वा अपने आप मीता के यौवन शिखरों को चूमने लगी थी और मीता के होंठ मेरे कंधों को चूमने लगे थे.

लन्ड अपनी कठोरता को प्राप्त करते हुए चूत के भीतर की दीवारों पर अपना कसाव बढ़ाते जा रहा था और मीता की चूत ढेर सारा काम रस बहता हुआ मेरी लन्ड के कसाव को सुगम बनाता जा रहा था और तभी मीता अचानक अत्यंत मादक सिसकारी भर उठी क्योंकि मेरा लन्ड एकदम से कठोर होकर एकदम भीतर जाकर मीता की बच्चेदानी को चूमने लगा था.

मेरे होंठों से भी मदभरी कराह फूट पड़ी, लन्ड स्वतः मीता की चूत की गहराई तक जा घुसा था और अंदर ही अंदर मुझे खुद को गति देने के लिए उकसाता हुआ टुनकता जा रहा था. लेकिन मैंने अपने लन्ड को कोई गति न देने का फैसला किया और मीता की पतली कमर के खमों को हाथों से सहलाता हुआ उसके कूल्हों को अपने दोनों हाथों से सहलाया और अपने होंठों को बारी बारी से दोनों यौवनकलशों को चूमने और चाटने लगा.

मीता पुनः यौन के जोश में अवश होकर आहें भरने लगी 'आआह उफ्फ इसीई ... उफ्फ नीलेश मेरे राजा ... ये क्या कर दिया है फिर से तुमने ... उफ्फ ... अब चोद दो न मुझे ... आआह रगड़ डालो अपने लन्ड से मेरी इस मुनिया को ... चोद दो जान मेरी ! और यह बोलते बोलते मीता स्वयमेव ही अपने कूल्हे ऊपर नीचे उछालने लगी.

“यह क्या कर रही हो मीता ... हम दोबारा से सेक्स नहीं कर सकते ... यह गलती एक बार हो गयी है, अब और नहीं मीता !”

यह कहकर मैंने अपने लन्ड को बाहर निकालना चाहा लेकिन तभी मीता ने कसकर अपनी

चूत की दीवारों में मेरे लन्ड को कस लिया और नीचे से स्वयं मुझे कूल्हे उछालकर चोदना शुरू कर दिया.

मेरे होंठों से आआह फूट पड़ी. उसने उत्तेजना में आकर अपने दांतों को मेरे कंधे में गड़ा दिया.

मैंने मीता के उरोजों के चूमने के बाद उसके होंठों को अपनी कैद में लिया और अपने हाथों में मीता की कमर को थामकर अपने लन्ड से इस पारी का पहला जोरदार शॉट लगाया और लन्ड चूत की अथाह गहराई तक उतार दिया.

और फिर तो खेल चल निकला, शॉट पर शॉट लगने लगे, गोल पर गोल होने लगे. हम दोनों में से कोई भी हार मानने को तैयार न था. मैंने अपने लन्ड को पांचवें गेयर में डाल दिया था और मीता भी उसी गियर पर मेरे साथ ही दौड़ रही थी.

मीता पूरे शरीर पर हाथ फेरता हुआ मैं अपने लन्ड से मीता की चूत पर अपना प्यार लगातार अंकित करता जा रहा था. प्यार का ये दौर इस बार काफी लंबा चला क्योंकि कुछ समय पहले ही हम फारिग हुए थे.

लेकिन आखिर इस खेल का भी अंत होना था, और हुआ भी !

“हम्म आआआ आआह ... !” एक गहरी और जोर से मादक सीत्कार हम दोनों के होंठों से निकली और एक साथ हम दोनों झड़ने लगे.

यह हमारा अंतिम और शायद हमारे साथ के प्यार का भी आखिरी दौर था और एक दूसरे से हमारा वादा था कि हम दोनों शादी के बाद एक दूसरे की जिन्दगी में सदा दूरी बना कर रखेंगे.

और मैं जानता था कि मीता यह वादा निभा लेगी लेकिन मुझे तो इसे निभाने के लिए भरसक प्रयास करने होंगे.

फिर भी मुझे यह वादा तो निभाना ही था और मैंने निभाया भी. उस दिन के बाद आज का दिन है 'वो है ... उसकी याद है ... उसके साथ गुजारे पलों की यादें अब भी ताज़े गुलाब के जैसी ही ताज़ा हैं.'

वो जहां भी है, बहुत खुश है. और शायद वो मुझे अब याद करती भी होगी ? या नहीं ...पता नहीं

लेकिन कभी कभी सोचता हूँ कि हमे उस दिन नहीं मिलना था... ये ज्यादा अच्छा न होता लेखक के आग्रह पर इमेल आईडी नहीं दिया जा रहा है.

Other stories you may be interested in

मेरा फर्स्ट सेक्स बॉयफ्रेंड के साथ

नमस्ते मेरा नाम नेहा है, ये नाम बदला हुआ है. मैं आपको अपनी जिंदगी की कुछ खास बातें मेरे फर्स्ट सेक्स के बारे में बताने जा रही हूँ. पहले मैं आपको अपनी फिगर के बारे में बता देती हूँ. मेरा [...]

[Full Story >>>](#)

मेरी प्रेयसी और मैं: दो बदन एक जान-1

मीता मेरी प्रेयसी प्रियतमा शरीके-हयात सब कुछ थी. उसकी शादी के पहले तक हम दोनों में जो सम्बन्ध था वो पति पत्नी से कम नहीं था और गरलफ्रेंड बॉयफ्रेंड के रिश्तों से काफी ऊपर था. उसके कॉलेज पढ़ने के सालों [...]

[Full Story >>>](#)

कम्प्यूटर सीखने के बहाने सेक्स का खेल-2

अब तक इस सेक्स स्टोरी के पहले भाग कम्प्यूटर सीखने के बहाने सेक्स का खेल-1 में आपने जाना कि सोनल ने मुझे अपने हुस्न के हर तरह के जलवे दिखा कर फंसाने की कोशिश की ... लेकिन मैंने उसके साथ [...]

[Full Story >>>](#)

अस्पताल में मिली शादीशुदा लड़की

अंतरवासना मंच के पाठको, एक अरसे बाद मैं एक नई कहानी आपके सामने लेकर आया हूँ। मेरे पाठकों को पता है, मैं दिल्ली में रहता हूँ। इसी दिसम्बर में मेरे एक परिचित दिल्ली के एक बड़े अस्पताल में एडमिट थे, [...]

[Full Story >>>](#)

नर्स सेक्स स्टोरी : गदर माल

अन्तर्वासना के सभी पाठकों और पाठिकाओं को सुन्दर सिंह का नमस्कार। मैं लगभग 6 महीने से अन्तर्वासना का नियमित पाठक हूँ। यहाँ की कहानियाँ पढ़कर मुझे लगा कि मैं भी अपनी आप बीती घटनाएं यहाँ बता सकता हूँ। मित्रो, यह [...]

[Full Story >>>](#)

